विद्याभवन, बालिका विद्यापीठ,लखीसराय

वर्ग- दशम्

विषय -हिन्दी

।।अध्ययन-सामग्री ।।

निर्देश – आज की कक्षा में सूरदास के चतुर्थ पद की व्याख्या दी जा रही है । आप इसे ध्यान पूर्वक पढ़ें और समझें व कांपी में लिखें ।

सूरदास के चतुर्थ पद

(4)

हरि हैं राजनीति पढ़ि आए।
समुझी बात कहत मधुकर के, समाचार सब पाए।
इक अति चतुर हुते पहिलैं ही, अब गुरु ग्रंथ पढ़ाए।
बढ़ी बुद्धि जानी जो उनकी, जोग-सँदेस पठाए।
ऊधौ भले लोग आगे के, पर हित डोलत धाए।
अब अपनै मन फेर पाइहैं, चलत जु हुते चुराए।
ते क्यौं अनीति करैं आपुन, जे और अनीति छुड़ाए।
राज धरम तौ यहै 'सूर', जो प्रजा न जाहिं सताए।।

सूरदास के पद की व्याख्या- हे सखी अब कृष्ण राजनीति शास्त्र में पूर्ण दक्ष हो गए हैं। वे पूर्ण राजनीतिज्ञ बन गए हैं। वह प्रेम संबंधी बातों में भी कपट और छल से काम ले रहे हैं। भ्रमर रूपी उद्धव ने जो ज्ञान योग से संबंधित बातें बताई हैं क्या वे तुम्हारी समझ में आई है ? इन बातों से कृष्ण का कोई समाचार जान पाई? हे कृष्ण तुम पहले से ही बहुत चालाक थे जिन्होंने हम सबको अपने प्रेम जाल में फंसा लिया और हमें यहां तड़पता छोड़ स्वयं मथुरा चले गए। उन्होंने अपनी विशाल बुद्धि एवं विवेक का परिचय देते हुए हम नारियों को योग उपासना का संदेश भेजा है। वस्तुतः यह उनकी मूढ़ता है जो हम युवतियों को योग का संदेश भेजा है।

हे सखी पहले समय में यहां के लोग बहुत ही सज्जन हुआ करते थे जो दूसरों की भलाई के कार्य करते हुए इधर-उधर भागदौड़ करते फिरते थे। दूसरी तरफ उधव है जो हम अबला को सताने के लिए यहां भागे चले आएं। हम तो कृष्ण से इतना भर चाहते हैं कि मथुरा जाते समय वह हमारा मन जिसे चुपचाप चुरा कर ले गए थे उसे लौटा दे किंतु उनसे ऐसे अनीतिपूर्ण कार्य की आशा नहीं है, जो दूसरों की परंपराओं और रिति को निभाने में लगे हुए हैं। वह स्वयं क्यों नहीं न्यायपूर्ण आचरण कर रहे हैं। अंत में सूरदास जी के अनुसार गोपियां कहती है कि राजा या शासक का यह धर्म है कि उसकी प्रजा पर कोई अत्याचार न हो उसे किसी भी तरह से

ह सखी पहले समय में यहां के लोग बहुत ही सज्जन हुआ करते थे जो दूसरों की भलाई के कार्य करते हुए इधर-उधर भागदौड़ करते फिरते थे। दूसरी तरफ उधव है जो हम अबला को सताने के लिए यहां भागे चले आएं। हम तो कृष्ण से इतना भर चाहते हैं कि मथुरा जाते समय वह हमारा मन जिसे चुपचाप चुरा कर ले गए थे उसे लौटा दे किंतु उनसे ऐसे अनीतिपूर्ण कार्य की आशा नहीं है, जो दूसरों की परंपराओं और रिति को निभाने में लगे हुए हैं। वह स्वयं क्यों नहीं न्यायपूर्ण आचरण कर रहे हैं। अंत में सूरदास जी के अनुसार गोपियां कहती है कि राजा या शासक का यह धर्म है कि उसकी प्रजा पर कोई अत्याचार न हो उसे किसी भी तरह से दुखी न किया जाए।